No of Questions : 30

No of Pages : 5

नामांक

माध्यमिक परीक्षा, 2019

हिन्दी

मॉडल पेपर 3

समय : $3\frac{1}{4}$ घण्टे **पूर्णांक : 80**

परीक्षार्थियों के लिए के लिये सामान्य निर्देश :–

1. परीक्षार्थी सर्वप्रथम अपने प्रश्न–पत्र पर नामांक अनिवार्यतः लिखें।
2. सभी प्रश्न करने अनिवार्य हैं।
3. प्रत्येक प्रश्न का उत्तर दी गई उत्तर–पुस्तिका में ही लिखें।
4. जिन प्रश्नों में आन्तरिक खण्ड हैं, उन सभी के उत्तर एक साथ ही लिखें।

खण्ड–अ

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिये गये प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

जगदीश चन्द्र बसु जीव–विज्ञान के साथ–साथ अन्य विषयों गणित, संस्कृत, लैटिन आदि में भी असाधारण थे। इसी कारण उन्हें कॉलेज में छात्रवृत्ति भी मिली। उन्हें सन् 1884 में कैम्ब्रिज से प्राकृतिक विज्ञान में स्नातक की उपाधि मिली। इसके बाद वे स्वदेश लौट आए। यहाँ आकर कलकत्ता के प्रेसीडेंसी कॉलेज में भौतिकी के प्रोफेसर नियुक्त हुए। इस कॉलेज में भारतीय अध्यापकों को अंग्रेजी अध्यापकों की अपेक्षा कम वेतन मिलता है। जगदीश चन्द्र बसु बड़े स्वाभिमानी थे। उन्होंने इस बात का विरोध किया। वे तीन साल तक इस कॉलेज में अध्यापन व अनुसंधान कार्य करते तो रहे परन्तु बिना वेतन के अंत में उनकी काम के प्रति निष्ठा और उत्साह देखकर कॉलेज के संचालकों को उनके प्रति अपनी राय बदलनी पड़ी और पूरा वेतन दिया जाने लगा। अतः भारतीय अध्यापकों के प्रति इस कॉलेज में जो गलत रवैया था, उसको उन्होंने सर्वथा बदल दिया।

1. उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए। 1

2. जगदीश चन्द्र बसु किस विषय के प्रोफेसर नियुक्त हुए? 1

3. जगदीश चन्द्र बसु को पूरा वेतन क्यों दिया जाने लगा? 2

निम्नलिखित पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिये गये प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

देखकर बाधा विविध, बहु विघ्न घबराते नहीं।
रह भरोसे भाग के दुख भोग पछताते नहीं।।
काम कितना ही कठिन हो किंतु उकताते नहीं।

www.rbse.online

www.rajteachers.com

भीड़ में चंचल बने जो वीर दिखलाते नहीं।।
हो गए एक आन में उनके बुरे दिन भी भले।
सब जगह सब काल में वे ही मिले फूले-फले।।

आज करना है जिसे करते उसे हैं आज ही।
सोचते-कहते हैं जो कुछ, कर दिखाते हैं वही।।
मानते जी की हैं, सुनते हैं सदा सबकी कही।
जो मदद करते हैं अपनी इस जगत में आप ही।।
भूलकर वे दूसरों का मुँह कभी ताकते नहीं।
कौन ऐसा काम है वे कर जिसे सकते नहीं।।

4. उपर्युक्त पद्यांश का उचित शीर्षक दीजिए। 1

5. कवि ने इस पद्यांश में किनकी प्रशंसा की है? 1

6. भाग्य के भरोसे रहने वालों को पछताना क्यों पड़ता है? 2

खण्ड-ब

7. दिए गए बिन्दुओं के आधार पर निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग 300 शब्दों में निबन्ध लिखिए। 8

1. प्रदूषण की समस्या
   (क) प्रस्तावना
   (ख) प्रदूषण का अर्थ
   (ग) प्रदूषण का मानव-जीवन पर प्रभाव
   (घ) जल-प्रदूषण
   (ङ) रासायनिक पदार्थों द्वारा प्रदूषण
   (च) ध्वनि-प्रदूषण
   (छ) प्रदूषण की रोकथाम के उपाय
   (ज) निष्कर्ष
2. राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी
   (क) प्रस्तावना
   (ख) जन्म
   (ग) शिक्षा
   (घ) माता को दिए गए तीन वचन
   (ङ) वकालत की शुरूआत
   (च) भारत छोड़ो आन्दोलन
   (छ) निधन
   (ज) निष्कर्ष
3. कन्या-भ्रूण हत्या : एक अभिशाप
   (क) प्रस्तावना
   (ख) कन्या-भ्रूण हत्या के कारण
   (ग) कन्या-भ्रूण हत्या रोकने के उपाय

www.rajteachers.com

(घ) उपसंहार

4. बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ
   (क) प्रस्तावना
   (ख) वर्तमान में समाज की बदली मानसिकता
   (ग) लिंगानुपात में बढ़ता अंतर
   (घ) बेटी–बचाओ बेटी–पढ़ाओ अभियान एवं उद्देश्य
   (ङ) उपसंहार

8. आपके पिताजी का स्थानान्तरण अजमेर हो गया है, आपको भी उनके साथ वहाँ जाकर अध्ययन करना है। अतः अपने प्रधानाचार्य जी को स्थानान्तरण प्रमाण–पत्र प्रदान करने हेतु प्रार्थना–पत्र लिखिए– 4

अथवा

8. प्रधानाचार्य, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, बयाना की ओर से अपने जिला भरतपुर के मुख्य चिकित्सा अधिकारी को पत्र लिखिए जिसमें विद्यालय के छात्रों के स्वास्थ्य परीक्षण का निवेदन हो। 4

खण्ड–स

9. **देव्यांश दक्ष को फुटबॉल देता है।** वाक्य में कौनसी क्रिया है? उसकी परिभाषा लिखिए। 2

10. कोष्ठकों में दिए कालों के अनुसार रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए– 3
    1. हम घूमने .... (जाना) (सामान्य भविष्यत्)
    2. अशोक .... (आना) (अपूर्ण भूतकाल)
    3. प्रमिला अभी–अभी .... (जाना) (आसन्न भूतकाल)

11. कर्मधारय समास और बहुव्रीहि समास का अन्तर स्पष्ट करते हुए अर्थसहित चार शब्द लिखिए। 2

12. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए। $1 \times 2 = 2$
    1. वह छत पर से गिर पड़ा।
    2. तुम्हारे को राम ने क्या कहा था?

13. निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ लिखिए। $1 \times 2 = 2$
    1. मनाने में लोहा लगना।
    2. इधर–उधर दृष्टि दौड़ाना।

14. **अधजल गगरी छलकत जाय** लोकोक्ति का आशय लिखिए। 1

खण्ड–द

15. निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए। 6

बरन बरन तरु फूले उपबन बन,
    सोई चतुरंग संग दल लहियतु है।
बंदी जिमि बोलत बिरद बीर कोकिल हैं,
    गुंजत मधुप गान गुन गहियतु हैं।

www.rbse.online
www.rajteachers.com

आवै आस-पास पुहूपन की सुबास सोई,
    सोने के सुगंध माँझ सने रहियतु हैं।
सोभा कौं समाज, सेनापति सुख-साज, आज,
    आवत बसंत रितुराज कहियतु है।।

अथवा

15. निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए। 6

देखैं छिति अंबर जलै है चारि ओर छोर,
    तिन तरबर सब ही कौं रूप ह्रयौ है।
महाझर लागै जोति भादव की होति चलै,
    जलद पवन तन सेक मानों पर्‌यौ है।
दारून तरनि तरैं नदी सुख पावैं सब,
    सीरी घन छाँह चाहिबौई चित्त धर्‌यौ है।
देखौ चतुराई सेनापति कविताई की जू,
    ग्रीषम विषम बरसा की सम कर्‌यौ है।।

16. निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए- 6

लड़के सबसे ज्यादा प्रसन्न है। किसी ने एक रोजा रखा है, वह भी दोपहर तक, किसी ने वह भी नहीं; लेकिन ईदगाह जाने की खुशी उनके हिस्से की चीज है। रोजे बड़े-बूढ़ों के लिए होंगे। इनके लिए तो ईद है। रोज ईद का नाम रटते थे आज वह आ गई। अब जल्दी पड़ी है कि लोग ईदगाह क्यों नहीं चलते? इन्हें गृहस्थी की चिंताओं से क्या प्रयोजन! सेवैयों के लिए दूध और शक्कर घर में है या नहीं, इनकी बला से, ये तो सेवैयाँ खाएँगे। वह क्या जाने कि अब्बाजान क्यों बदहवास चौधरी कायमअली के घर दौड़े जा रहे हैं। उन्हें क्या खबर कि चौधरी आज आँखें बदल लें, तो यह सारी ईद मुहर्रम हो जाए।

अथवा

16. निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए- 6

उस अठन्नी को ईमान की तरह बचाती चली आती थी इसी ईद के लिए, लेकिन कल ग्वालन सिर पर सवार हो गई तो क्या करती! हामिद के लिए कुछ नहीं है, तो दो पैसे का दूध तो चाहिए ही। अब तो कुल दो आने पैसे बच रहे हैं। तीन पैसे हामिद की जेब में, पाँच अमीना के बटुवे में। यही तो बिसात है और ईद का त्योहार, अल्लाह ही बेड़ा पार लगाए। सभी को सेवैयाँ चाहिए और थोड़ा किसी की आँखों नहीं लगता। किस-किस से मुँह चुराएगी। और मुँह क्यों चुराए? साल-भर का त्योहार है। जिदंगी खैरियत से रहे, उनकी तकदीर भी तो उसी के साथ है। बच्चे को खुदा सलामत रखें, ये दिन भी कट जाएँगे।

17. सेनापति का ऋतु वर्णन हिन्दी साहित्य में अनूठा क्यों है? 6

अथवा

17. पठित काव्यांश के आधार पर शीत ऋतु का वर्णन कीजिए। 6

18. **स्त्री-शिक्षा समाज के पतन का कारण नहीं वरन् समाज के विकास की सीढ़ी है।** इस कथन के आलोक में स्त्री-शिक्षा पर अपने विचार लिखिए। 6

www.rajteachers.com

अथवा

18. **स्त्रियों को पढ़ाने से अनर्थ होते हैं**–कुतर्कवादियों की इस दलील का खण्डन द्विवेदीजी ने कैसे किया? अपने शब्दों में लिखिए। 6

19. गोपियों का सर्वस्व किसने और किस प्रकार लूट लिया था? 2

20. श्रीकृष्ण की हँसी की तुलना कवि ने चाँदनी से क्यों की है? 2

21. **मातृ–वन्दना** कविता में कवि माँ भारती से किस आशीर्वाद की अपेक्षा करता है? 2

22. **एक अद्भुत अपूर्व स्वप्न** नामक पाठ का वर्ण्य–विषय क्या है? 2

23. अमर शहीद एकांकी के पात्र सागरमल गोपा के देश–प्रेम के बलिदान पर प्रकाश डालिए। 2

24. पीपा ने अपनी भक्ति–भावना द्वारा समाज के उपेक्षित वर्ग को किस प्रकार दृढ़ बनाया? 2

25. **ग्रीष्म विषम बरसा की सम कर्‌यौ है** इस पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए। 1

26. **आयौ सखी सावन** पंक्ति में कवि क्या संकेत कर रहा है? 1

27. बौद्ध धर्म के त्रिपिटक ग्रंथ की भाषा क्या है? 1

28. संत पीपा को काशी जाकर गुरु रामानन्द से मिलने की सलाह किसने दी थी? 1

29. सेनापति के काव्य की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। 4

30. महावीर प्रसाद द्विवेदी का साहित्यिक परिचय दीजिए। 4

□□□□□□□

www.rbse.online
www.rajteachers.com

राजस्थान बोर्ड नमूना परीक्षा 2019
10वीं कक्षा
हिन्दी
मॉडल पेपर 3

समय : $3\frac{1}{4}$ घंटे **(पूर्णांक : 80)**

परीक्षार्थियों के लिये सामान्य निर्देश :-

1. परीक्षार्थी सर्वप्रथम अपने प्रश्न-पत्र पर नामांक अनिवार्यतः लिखें।
2. सभी प्रश्न करने अनिवार्य हैं।
3. प्रत्येक प्रश्न का उत्तर दी गई उत्तर-पुस्तिका में ही लिखें।
4. जिन प्रश्नों में आन्तरिक खण्ड हैं, उन सभी के उत्तर एक साथ ही लिखें।

खण्ड-अ

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिये गये प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

जगदीश चन्द्र बसु जीव-विज्ञान के साथ-साथ अन्य विषयों गणित, संस्कृत, लैटिन आदि में भी असाधारण थे। इसी कारण उन्हें कॉलेज में छात्रवृत्ति भी मिली। उन्हें सन् 1884 में कैम्ब्रिज से प्राकृतिक विज्ञान में स्नातक की उपाधि मिली। इसके बाद वे स्वदेश लौट आए। यहाँ आकर कलकत्ता के प्रेसीडेंसी कॉलेज में भौतिकी के प्रोफेसर नियुक्त हुए। इस कॉलेज में भारतीय अध्यापकों को अंग्रेजी अध्यापकों की अपेक्षा कम वेतन मिलता है। जगदीश चन्द्र बसु बड़े स्वाभिमानी थे। उन्होंने इस बात का विरोध किया। वे तीन साल तक इस कॉलेज में अध्यापन व अनुसंधान कार्य करते तो रहे परन्तु बिना वेतन के अंत में उनकी काम के प्रति निष्ठा और उत्साह देखकर कॉलेज के संचालकों को उनके प्रति अपनी राय बदलनी पड़ी और पूरा वेतन दिया जाने लगा। अतः भारतीय अध्यापकों के प्रति इस कॉलेज में जो गलत रवैया था, उसको उन्होंने सर्वथा बदल दिया।

1. उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए। 1
उत्तर :
उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक **जगदीश चन्द्र बसु** हैं।

2. जगदीश चन्द्र बसु किस विषय के प्रोफेसर नियुक्त हुए? 1
उत्तर :
जगदीश चन्द्र बसु भौतिकी विषय के प्रोफेसर नियुक्त हुए थे।

3. जगदीश चन्द्र बसु को पूरा वेतन क्यों दिया जाने लगा? 2
उत्तर :
जगदीश चन्द्र बसु को उनकी काम के प्रति निष्ठा और लगन को देखकर पूरा वेतन दिया जाने लगा।

निम्नलिखित पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिये गये प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

देखकर बाधा विविध, बहु विघ्न घबराते नहीं।
रह भरोसे भाग के दुख भोग पछताते नहीं।।
काम कितना ही कठिन हो किंतु उकताते नहीं।
भीड़ में चंचल बने जो वीर दिखलाते नहीं।।
हो गए एक आन में उनके बुरे दिन भी भले।
सब जगह सब काल में वे ही मिले फूले-फले।।

आज करना है जिसे करते उसे हैं आज ही।
सोचते-कहते हैं जो कुछ, कर दिखाते हैं वही।।
मानते जी की हैं, सुनते हैं सदा सबकी कही।
जो मदद करते हैं अपनी इस जगत में आप ही।।
भूलकर वे दूसरों का मुँह कभी ताकते नहीं।
कौन ऐसा काम है वे कर जिसे सकते नहीं।।

4. उपर्युक्त पद्यांश का उचित शीर्षक दीजिए। 1
उत्तर :
उपर्युक्त पद्यांश का उचित शीर्षक **कर्मवीर** है।

5. कवि ने इस पद्यांश में किनकी प्रशंसा की है? 1
उत्तर :
कवि ने उपर्युक्त पद्यांश में **कर्मवीरों** की प्रशंसा की है।

6. भाग्य के भरोसे रहने वालों को पछताना क्यों पड़ता है? 2
उत्तर :
भाग्य के भरोसे रहने वाले को पछताना पड़ता है, क्योंकि वह कभी अपने लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर पाता।

खण्ड-ब

7. दिए गए बिन्दुओं के आधार पर निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर

सभी विद्यार्थियों से निवेदन है कि RBSE के सॉल्वड मॉडल पेपर/डेस्क वर्क प्राप्त करने के लिए 9460377092 को अपनी क्लास के व्हाट्सएप्प ग्रुप में एड करें। आपकी क्लास के व्हाट्सएप्प ग्रुप में पेपर भेज दिए जाएंगे।
www.rajteachers.com

लगभग 300 शब्दों में निबन्ध लिखिए। 8

1. प्रदूषण की समस्या
   (क) प्रस्तावना
   (ख) प्रदूषण का अर्थ
   (ग) प्रदूषण का मानव-जीवन पर प्रभाव
   (घ) जल-प्रदूषण
   (ड़) रासायनिक पदार्थों द्वारा प्रदूषण
   (च) ध्वनि-प्रदूषण
   (छ) प्रदूषण की रोकथाम के उपाय
   (ज) निष्कर्ष
2. राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी
   (क) प्रस्तावना
   (ख) जन्म
   (ग) शिक्षा
   (घ) माता को दिए गए तीन वचन
   (ड़) वकालत की शुरूआत
   (च) भारत छोड़ो आन्दोलन
   (छ) निधन
   (ज) निष्कर्ष
3. कन्या-भ्रूण हत्या : एक अभिशाप
   (क) प्रस्तावना
   (ख) कन्या-भ्रूण हत्या के कारण
   (ग) कन्या-भ्रूण हत्या रोकने के उपाय
   (घ) उपसंहार
4. बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ
   (क) प्रस्तावना
   (ख) वर्तमान में समाज की बदली मानसिकता
   (ग) लिंगानुपात में बढ़ता अंतर
   (घ) बेटी-बचाओ बेटी-पढ़ाओ अभियान एवं उद्देश्य
   (ड़) उपसंहार

उत्तर :

1. प्रदूषण की समस्या

(क) **प्रस्तावना –** आज विश्व के सामने अनेक समस्याएं चुनौती बनी हुई हैं। प्रदूषण की समस्या उनमें से एक मुख्य समस्या है। प्रदूषण के कारण आज मानव का जीवन संकट में पड़ गया है। यह समस्या विज्ञान की देन है। यह महा उद्योगों की समृद्धि का बोनस है। यह मानव को मौत के मुँह में धकेलने की अनाचारी चेष्टा है। यह बीमारियों को निमन्त्रण है। यह प्राणिमात्र के अमंगल की अप्रत्यक्ष कामना है।

(ख) **प्रदूषण का अर्थ –** प्रदूषण का अर्थ है- पर्यावरण में असन्तुलन आना। हवा, जल, मिट्टी, पौधे, वृक्ष और पशु मिलकर पर्यावरण का निर्माण करते हैं और पारस्परिक सन्तुलन बनाए रखने के लिए दूसरे को प्रभावित करते हैं। यह प्रतिक्रिया विज्ञान संबंधी सन्तुलन कहलाती है। कभी-कभी कुछ कारणवश परिवर्तन आ जाता है। यदि इस परिवर्तन की प्रक्रिया का प्रकृति के साथ सामंजस्य न किया जाए तो इससे ऐसी स्थिति पैदा हो जाती है कि मानव-जीवन संकट में पड़ जाता है। यह असन्तुलन ही प्रदूषण का जन्मदाता है।

(ग) **प्रदूषण का मानव-जीवन पर प्रभाव –** पर्यावरण-प्रदूषण का मानव-जीवन पर अत्यन्त विपरीत प्रभाव पड़ रहा है। वायुमण्डल में कार्बन-डाइ-ऑक्साइड की मात्रा में 16 प्रतिशत की वृद्धि हो गई है। यदि इसकी वृद्धि इसी प्रकार होती रही तो नगरों में रहने वाले लोग श्वास-रोग और नेत्र रोग से पीड़ित हो जाएंगे। कारखानों में जलाए जाने वाले ईंधन से जो धुआँ और गैस निकलती है उनसे खाँसी और फेफड़ों संबंधी रोग हो जाते हैं। इतना ही नहीं, दूषित पर्यावरण से कैंसर जैसे रोग भी फैलते हैं।

(घ) **जल-प्रदूषण –** वायु-प्रदूषण के अतिरिक्त जल-प्रदूषण भी मानव-जीवन के लिए हानिकारक है। घरेलू गन्दा पानी, नालियों में प्रवाहित मल तथा कारखानों से निकलने वाले व्यर्थ पदार्थ नदियों और समुद्रों में बहा दिए जाते हैं। इससे पानी जहरीला बन जाता है। पानी में ऑक्सीजन की मात्रा कम हो जाती है जिससे जल में रहने वाले जीवों के साथ ही मानव जीवन को खतरा बढ़ जाता है।

(ड़) **रासायनिक पदार्थों द्वारा प्रदूषण –** रासायनिक पदार्थों के अत्यधिक प्रयोग द्वारा भी पर्यावरण प्रदूषित होता है। प्रायः किसान लोग पैदावार की बढ़ोत्तरी के लिए रसायनों और कीटनाशक दवाइयों का प्रयोग करते हैं, जिनका स्वास्थ्य पर हानिकारक प्रभाव पड़ता है।

(च) **ध्वनि-प्रदूषण –** वायु एवं जल-प्रदूषण की तरह ध्वनि-प्रदूषण भी मानव-जीवन के लिए हानिकारक है। वर्तमान यान्त्रिक युग में ध्वनि-प्रदूषण भी एक गंभीर समस्या बनी हुई है। तीव्र ध्वनि का प्रभाव हमारी श्वसन-प्रक्रिया पर पड़ता है। इससे पाचन-क्रिया भी प्रभावित होती है। इसका सीधा प्रभाव अनुकम्पी तंत्रिका तंत्र से नियन्त्रित होने वाले अवयवों पर पड़ता है, जिससे उनमें तनाव बढ़ जाता है और नेत्र-ज्योति कम हो जाती है।

(छ) **प्रदूषण की रोकथाम के उपाय –** वन प्रदूषण की रोकथाम में महत्त्वपूर्ण कार्य करते हैं। वे वायुमण्डल में गैसों के अनुपात को समान रखते हैं। बाढ़, भू-स्खलन, भू-क्षरण, रेगिस्तानों के विस्तार, जल-स्त्रोतों के सूखने तथा वायु-प्रदूषण के रूप में होने वाली तबाही से भी जन-जन की सहायता करते हैं। इसलिए उनकी रक्षा करना मानव का परम धर्म है। सत्ता का कानून, अनुसंधान संस्थाओं के अनुसंधान, औद्योगिक संस्थाओं के अथक प्रयास और इस समस्या के प्रति जन-जन की जागरूकता ही प्रदूषण की समस्या को दूर कर सकती है। ये समन्वित प्रयास ही इस अदृश्य शत्रु का संहार कर सकेंगे।

(ज) **निष्कर्ष –** सार रूप में कहा जा सकता है कि शुद्ध जल, शुद्ध वायु, स्वच्छ भोजन तथा शान्त वातावरण मानव-जीवन की सुरक्षा के लिए आवश्यक तत्व हैं। प्रदूषण एक गम्भीर समस्या है। हमें इसका सामना हिम्मत से करना होगा। इस समस्या को समाप्त करके ही हम प्राणिमात्र के दीर्घ जीवन की कामना कर सकते हैं।

2. राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी

(क) **प्रस्तावना –** राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी जी का स्थान सभी महान् नेताओं में सबसे ऊँचा है। उन्होंने सत्य और अहिंसा के बल पर अंग्रेजों जैसी ताकत को भारत को स्वतन्त्र करने के लिए मजबूर कर दिया था। विश्व के इतिहास में उनका नाम सदा सम्मान से लिया जाएगा। गाँधी जी मानवता के उपासक थे।

सभी गुरूजनों से निवेदन है कि RBSE के सॉल्वड मॉडल पेपर प्राप्त करने के लिए 9460377092 पर सिर्फ TEACHER शब्द SMS करें (व्हाट्सएप्प ना करें) आपसे संपर्क कर आपको विशेष रूप से मॉडल पेपर भेजे जाएंगे।
www.rajteachers.com

(ख) **जन्म –** गाँधी जी का जन्म गुजरात के काठियावाड़ के पोरबन्दर नामक स्थान पर 2 अक्टूबर, 1869 को हुआ था। यह दिन भारतवर्ष के लिए ही नहीं, अपितु समस्त संसार के लिए शुभ माना जाता है। गाँधी जी का पूरा नाम मोहनदास कर्मचन्द गाँधी था। उनके पिता राजकोट राज्य के दीवान थे। उनकी माता श्रीमती पुतलीबाई धार्मिक विचारों वाली साध्वी नारी थी।

(ग) **शिक्षा –** गाँधी जी की शिक्षा पोरबन्दर में प्रारंभ हुई। वे कक्षा के साधारण विद्यार्थी थे। वे अपने सहपाठियों से बहुत कम बात करते थे। पढ़ाई में वे मध्यम छात्र थे। वे अपने अध्यापकों का आदर करते थे। दसवीं की परीक्षा उन्होंने स्थानीय स्कूल से ही प्राप्त की। तेरह वर्ष की आयु में ही उनका विवाह कस्तूरबा बाई से कर दिया गया।

(घ) **माता को दिए गए तीन वचन –** जब महात्मा गाँधी वकालत की शिक्षा ग्रहण करने के लिए इंग्लैण्ड गए तब वे एक पुत्र के पिता भी बन चुके थे। इंग्लैण्ड जाने से पूर्व उन्होंने अपनी माता को तीन वचन दिए। उन्होंने माँस न खाने, शराब न पीने और पराई स्त्री को बुरी नजर से न देखने इन तीनों वचनों का पालन भली–भाँति किया। गाँधी जी वहाँ से एक अच्छे वकील बनकर लौटे।

(ड़) **वकालत की शुरूआत –** गाँधी जी ने मुम्बई आकर वकालत का कार्य प्रारंभ किया। किसी विशेष मुकदमें की पैरवी करने के लिए वे दक्षिणी अफ्रीका गए। वहाँ भारतीयों के साथ अंग्रेजों का दुर्व्यवहार देखकर उनमें राष्ट्रीय भाव जागृत हुआ। सन् 1915 में जब वे दक्षिणी अफ्रीका से भारत लौटे तो उस समय अंग्रेजों का दमन–चक्र जोरों पर था। उस समय भारत में रौलेट एक्ट जैसे काले कानून लागू थे। सन् 1919 की जलियाँवाला बाग की नरसंहारी दुर्घटना ने मानवता को नतमस्तक कर दिया था। उस समय अखिल भारतीय काँग्रेस केवल पढ़े–लिखे मध्यवर्गीय लोगों की एक संस्था थी। देश की बागडोर लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक के हाथ में थी। उस समय काँग्रेस की स्थिति इतनी ठीक नहीं थी। वह दो दलों–नरम दल और गरम दल–में विभक्त थी। सन् 1920 में महात्मा गाँधी जी ने असहयोग आन्दोलन का सूत्रपात्र करके भारतीय राजनीति को एक नया मोड़ दिया।

(च) **भारत छोड़ो आन्दोलन –** सन् 1942 में महात्मा गाँधी जी ने संसार की राजनीतिक परिस्थितियों को देखते हुए **भारत छोड़ो आन्दोलन** की शुरूआत की। उनका कहना था कि **यह हमारी आखिरी लड़ाई है।** वे अपने साथियों के साथ जेल गए। इस प्रकार उन्होंने 15 अगस्त, 1947 के पावन दिन, भारत को अंग्रेजों से आजादी दिलवाई। इस अवसर पर भारत का बँटवारा हो गया। भारत और पाकिस्तान दो अलग देश बन गए।

(छ) **निधन –** अत्यन्त दुःख के साथ कहा जा सकता है कि अहिंसा के पुजारी स्वयं हिंसा के शिकार हो गये। 30 जनवरी, 1948 को नाथूराम गोडसे ने उन्हें गोली मारी।

(ज) **निष्कर्ष –** सार रूप में कहा जा सकता है कि अहिंसा के पुजारी महात्मा गाँधी जी का नाम इतिहास में सदैव स्वर्ण अक्षरों में लिखा जाएगा। अमन के पुजारियों में उनका नाम सम्मान सहित लिया जाता है। भारत की आने वाली पीढ़ियों को उनके जीवन से शिक्षा लेकर भारत की सेवा करनी चाहिए।

3. कन्या–भ्रूण हत्या : एक अभिशाप

(क) **प्रस्तावना –** परमात्मा की सृष्टि में मानव का विशेष महत्त्व है, उसमें नर के समान नारी का समानुपात नितान्त निहित है। नर और नारी दोनों के संसर्ग से भावी सन्तान का जन्म होता है तथा सृष्टि–प्रक्रिया आगे बढ़ती है। परन्तु वर्तमान काल में अनेक कारणों से नर–नारी के मध्य लिंग–भेद का रूप सामने आ रहा है, जो कि पुरुष–सत्तात्मक समाज में कन्या–भ्रूण हत्या का पर्याय बनकर असमानता बढ़ा रहा है। हमारे देश में कन्या–भ्रूण हत्या आज अमानवीय कार्य बन गया है जो कि चिन्तनीय विषय है।

(ख) **कन्या–भ्रूण हत्या के कारण –** भारतीय मध्यवर्गीय समाज में कन्या–जन्म को अशुभ माना जाता है, क्योंकि कन्या को पाल–पोषकर, शिक्षित–सुयोग्य बनाकर उसका विवाह करना पड़ता है। इस निमित्त काफी धन व्यय हो जाता है। विशेषकर विवाह में दहेज आदि के कारण मुसीबतें आ जाती हैं। कन्या को पराया धन मानते हैं, जबकि पुत्र को ही कुल–परम्परा को बढ़ाने वाला तथा वृद्धावस्था का सहारा मानकर कुछ लोग कन्या–जन्म नहीं चाहते हैं। इन सब कारणों से पहले कुछ क्षेत्रों अथवा जातियों में कन्या–जन्म के समय ही उसे मार दिया जाता था। वर्तमान युग में अब भ्रूण हत्या के द्वारा कन्या–जन्म को पहले ही रोक दिया जाता है।

(ग) **कन्या–भ्रूण हत्या रोकने के उपाय –** भारत सरकार ने कन्या–भ्रूण हत्या को प्रभावी ढंग से रोकने के लिए अल्ट्रासाउण्ड मशीनों से लिंग–ज्ञान पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगा दिया है। इसके लिए **प्रसवपूर्व निदान तकनीकी अधिनियम (पी.एन.डी.टी.), 1994** के रूप में कठोर दण्ड–विधान किया गया है। साथ ही नारी सशक्तीकरण, बालिका निःशुल्क शिक्षा, पैतृक उत्तराधिकार, समानता का अधिकार आदि अनेक उपाय अपनाये गये हैं। यदि भारतीय समाज में पुत्र एवं पुत्री में अन्तर नहीं किया जाये, कन्या–जन्म को परिवार में मंगलकारी समझा जावे, कन्या को घर की लक्ष्मी एवं सरस्वती मानकर उसका लालन–पालन किया जावे, तो कन्या–भ्रूण हत्या पर प्रतिबंध स्वतः ही लग जायेगा।

(घ) **उपसंहार –** वर्तमान में लिंग–चयन एवं लिंगानुपात विषय पर चिन्तन किया जा रहा है। संयुक्त–राष्ट्रसंघ में कन्या–संरक्षण के लिए घोषणा की गई है। भारत सरकार ने भी लिंगानुपात को ध्यान में रखकर कन्या–भ्रूण हत्या पर कठोर प्रतिबन्ध लगा दिया है। वस्तुतः कन्या–भ्रूण हत्या का यह नृशंस कृत्य पूरी तरह समाप्त होना चाहिए।

4. बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ

(क) **प्रस्तावना –** परमात्मा की इस सृष्टि में नर और नारी जीवन–रथ के दो ऐसे पहिए हैं, जो दाम्पत्य बंधन में बँधकर सृष्टि–प्रक्रिया को आगे बढ़ाते हैं। परन्तु वर्तमान काल में अनेक कारणों में लिंग–भेद का अन्तर सामने आ रहा है, जो कन्या–भ्रूण हत्या का पर्याय बनकर बालक–बालिका के समान अनुपात को बिगाड़ रहा है। इस कारण आज **बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ** जैसी समस्या का नारा देना हमारे लिए शोचनीय है।

(ख) **वर्तमान में समाज की बदली मानसिकता –** वर्तमान में मध्यमवर्गीय समाज अपनी रूढ़िवादी सोच के कारण बेटी को पराया धन मानता है। इसलिए बेटी को पालना–पोसना, पढ़ाना–लिखाना, उसकी

सभी विद्यार्थियों से निवेदन है कि RBSE के सॉल्वड मॉडल पेपर/डेस्क वर्क प्राप्त करने के लिए 9460377092 को अपनी क्लास के व्हाट्सएप्प ग्रुप में एड करें। आपकी क्लास के व्हाट्सएप्प ग्रुप में पेपर भेज दिए जाएंगे।
www.rajteachers.com

शादी में दहेज देना आदि को बेवजह का भार ही मानता है। इस दृष्टि से कुछ स्वार्थी लोग कन्या को जन्म नहीं देना चाहते हैं। वे चिकित्सकीय साधनों के द्वारा गर्भावस्था में ही लिंग–परीक्षण करवाकर कन्या–जन्म को रोक देते हैं। इसके फलस्वरूप जनसंख्या में बालक–बालिकाओं के अनुपात में अन्तर स्पष्ट दिखाई पड़ने लगा है जो भावी दाम्पत्य–जीवन के लिए एक बहुत बड़ा संकट बन रहा है।

(ग) **लिंगानुपात में बढ़ता अन्तर –** वर्तमान समाज की बदली मानसिकता के कारण लिंगानुपात बिगड़ता ही जा रहा है। यह तथ्य विभिन्न दशकों में हुई जनगणना के आँकड़ों से स्पष्ट होता है। सन् 2011 की जनगणना के आधार पर हमारे देश में बालक और बालिका का अनुपात एक हजार में लगभग 918 तक पहुँच गया है। इस लिंगानुपात के बढ़ते अन्तर को तथा बालिकाओं की शिक्षा के प्रति उदासीनता को देखकर समाज की ही नहीं सरकार की भी चिन्ता बढ़ गयी है। इस चिन्ता से ही मुक्त होने की दिशा में सरकार ने **बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ** का नारा दिया है।

(घ) **बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ–अभियान एवं उद्देश्य – बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ** अभियान को लेकर देश की संसद में घोषणा की गई है तथा इस आवश्यकता पर बल दिया गया है कि **बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ,** से उनका संरक्षण और सशक्तीकरण किया जाए। इसके बाद यह निश्चय किया गया कि महिला एवं बाल विकास विभाग इस अभियान का मुख्य मंत्रालय होगा, जो कि परिवार कल्याण और मानव संसाधन विकास मंत्रालय के साथ मिलकर इस कार्य को आगे बढ़ायेंगे। इस अभियान में लिंग परीक्षण पर रोक लगाने, बालिका भ्रूण–हत्या को रोकने, बालिकाओं को पूर्ण संरक्षण तथा उनके विकास की सभी गतिविधियों में सरकार की पूर्ण भागीदारी रहेगी। संविधान के माध्यम से लिंगाधार पर किसी भी प्रकार का भेदभाव नहीं किया जायेगा। साथ ही लिंग परीक्षण पूर्णतया प्रतिबन्धित होगा।

(ड़) **उपसंहार – बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ** अभियान के प्रति हमारी सामाजिक जागरूकता आनी चाहिए और हमारी रूढ़िवादी सोच का परित्याग होना चाहिए। ईश्वर के प्रति आस्था व्यक्त करते हुए हमें यह सोचना चाहिए कि सन्तान ईश्वर की देन है। हम किसी के भी भाग्यविधाता नहीं हैं। इस परिवर्तित सोच से ही बिगड़ते लिंगानुपात में परिवर्तन आयेगा और बेटियों को समाज में सम्मानजनक स्थान प्राप्त होगा। हम समझ जायेंगे कि बेटी घर का भार नहीं, घर की रोशनी ही होती है।

8. आपके पिताजी का स्थानान्तरण अजमेर हो गया है, आपको भी उनके साथ वहाँ जाकर अध्ययन करना है। अतः अपने प्रधानाचार्य जी को स्थानान्तरण प्रमाण–पत्र प्रदान करने हेतु प्रार्थना–पत्र लिखिए– 4

उत्तर :

सेवा में,

प्रधानाचार्य महोदय,

माहेश्वरी उच्च माध्यमिक विद्यालय,

जयपुर।

विषय : स्थानान्तरण प्रमाण–पत्र के लिए प्रार्थना–पत्र।

महोदय,

निवेदन है कि मेरे पिताजी का यहाँ से अजमेर स्थानान्तरण हो गया है। मुझे भी उनके साथ वहाँ जाकर अपना अध्ययन करना है। अतः अब मैं यहाँ रहकर अपनी पढ़ाई जारी रख पाने में असमर्थ हूँ।

अतः निवेदन है कि मुझे स्थानान्तरण प्रमाण–पत्र (टी.सी.) प्रदान करने की कृपा करें। मेरी तरफ विद्यालय का कुछ बकाया नहीं है।

सधन्यवाद।

आपका आज्ञाकारी शिष्य,

(क, ख, ग) नाम

दिनांक : 20 अगस्त, 2018 कक्षा–10

अथवा

8. प्रधानाचार्य, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, बयाना की ओर से अपने जिला भरतपुर के मुख्य चिकित्सा अधिकारी को पत्र लिखिए जिसमें विद्यालय के छात्रों के स्वास्थ्य परीक्षण का निवेदन हो। 4

उत्तर :

प्रतिष्ठा में,

मुख्य चिकित्सा अधिकारी,

भरतपुर।

विषय : विद्यालय के छात्रों के स्वास्थ्य परीक्षण हेतु।

महोदय,

उक्त विषय में निवेदन है कि शिक्षा विभाग, राजस्थान के निर्देशानुसार विद्यालय में अध्ययनरत छात्रों का स्वास्थ्य परीक्षण वर्ष में दो बार किया जाना अपेक्षित है। अतः आपसे अनुरोध है कि इस विद्यालय के छात्रों का स्वास्थ्य परीक्षण इसी माह करने हेतु चिकित्सकों की नियुक्ति कर अनुगृहीत करें।

कृपया स्वास्थ्य परीक्षण की निश्चित की गई तिथि से इस कार्यालय को भी अवगत करवाने का श्रम करें, जिससे छात्रों को सूचित किया जा सके।

धन्यवाद सहित।

भवदीय,

हस्ताक्षर ....

(नाम)

दिनांक : 08 अगस्त, 2018 प्रधानाचार्य

राजकीय उ.मा. विद्यालय, बयाना

खण्ड–स

9. देव्यांश दक्ष को फुटबॉल देता है। वाक्य में कौनसी क्रिया है? उसकी परिभाषा लिखिए। 2

उत्तर :

इस वाक्य में **द्विकर्मक** क्रिया है।

परिभाषा–जिस क्रिया के दो कर्म होते हैं, वह द्विकर्मक क्रिया कहलाती है।

10. कोष्ठकों में दिए कालों के अनुसार रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए– 3

1. हम घूमने .... (जाना) (सामान्य भविष्यत्)
2. अशोक .... (आना) (अपूर्ण भूतकाल)
3. प्रमिला अभी–अभी .... (जाना) (आसन्न भूतकाल)

उत्तर :

1. हम घूमने जायेंगे।
2. अशोक आ रहा था।

सभी गुरूजनों से निवेदन है कि RBSE के सॉल्वड मॉडल पेपर प्राप्त करने के लिए 9460377092 पर सिर्फ TEACHER शब्द SMS करें (व्हाट्सएप्प ना करें) आपसे संपर्क कर आपको विशेष रूप से मॉडल पेपर भेजे जाएंगे।
www.rajteachers.com

3. प्रमिला अभी-अभी गयी है।

11. कर्मधारय समास और बहुब्रीहि समास का अन्तर स्पष्ट करते हुए अर्थसहित चार शब्द लिखिए। 2

उत्तर :

कर्मधारय समास में एक पद विशेषण होता है और दूसरा पद विशेष्य। इसमें कहीं-कहीं उपमेय-उपमान का सम्बन्ध होता है तथा विग्रह करने पर रूपी शब्द प्रयुक्त होता है जबकि बहुब्रीहि समास में दोनों पद समास युक्त होकर किसी तीसरे शब्द के विशेषण बन जाते हैं। इस समास में दोनों शब्दों में से कोई भी प्रधान नहीं होता और समस्त पद किसी अन्य संज्ञा की ओर संकेत करता है, उदाहरणार्थ-

1 चन्द्रमुखी - चन्द्रमा के समान मुख वाली है जो वह (बहुब्रीहि)
2. गिरिधर - गिरि को धारण करने वाला है जो वह-श्रीकृष्ण (बहुब्रीहि)
3. महात्मा - महान् है जो आत्मा (कर्मधारय)
4. घनश्याम - घन जैसा श्याम (कर्मधारय)

12. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए। $1 \times 2 = 2$

1. वह छत पर से गिर पड़ा।
2. तुम्हारे को राम ने क्या कहा था?

उत्तर :

1. वह छत से गिर पड़ा।
2. तुम्हें राम ने क्या कहा था?

13. निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ लिखिए। $1 \times 2 = 2$

1. मनाने में लोहा लगना।
2. इधर-उधर दृष्टि दौड़ाना।

उत्तर :

1. **मनाने में लोहा लगना** (बहुत मुश्किल से मानना)- सात्त्विक यदि नाराज़ हो जाए तो उसे मानने में लोहा लगता है।
2. **इधर-उधर दृष्टि दौड़ाना** (सब ओर देखना)- जब विजय देर से घर पहुँचा तो माँ के डर से इधर-उधर दृष्टि दौड़ाने लगा।

14. **अधजल गगरी छलकत जाय** लोकोक्ति का आशय लिखिए। 1

उत्तर :

अधजल गगरी छलकत जाय- ओछा मनुष्य अधिक इतराता है।

खण्ड-द

15. निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए। 6

बरन बरन तरु फूले उपबन बन,
सोई चतुरंग संग दल लहियतु है।
बंदी जिमि बोलत बिरद बीर कोकिल हैं,
गुंजत मधुप गान गुन गहियतु हैं।
आवै आस-पास पुहूपन की सुबास सोई,
सोने के सुगंध माँझ सने रहियतु हैं।
सोभा कौं समाज, सेनापति सुख-साज, आज,
आवत बसंत रितुराज कहियतु है।।

उत्तर :

प्रसंग- प्रस्तुत पद्यांश कवि सेनापति द्वारा रचित ऋतु-वर्णन से लिया गया है। इसमें वसन्त-ऋतु को एक राजा की तरह दर्शाकर उसके ऋतुराज अर्थात् ऋतुओं का राजा नाम को सार्थक बताया गया है।

व्याख्या- कवि सेनापति वसन्त ऋतु का वर्णन करते हुए कहते हैं कि वसन्त ऋतु एक राजा के समान आ रहा है। वसन्त ऋतु के आने पर उद्यानों तथा वनों में अनेक प्रकार के रंग-बिरंगे फूलों से फूले हुए पेड़ ही राजा की चतुरंगिणी सेना के रूप में सुशोभित हैं। वसन्त में तोते व कोयलों के मधुर स्वर बन्दी जनों की तरह सुन्दर विरुदावली के गान हैं, अर्थात् वे वसन्त रूपी राजा का स्तुतिगान कर रहे हैं तथा भौंरे गुण-ग्रहण करते हुए, यशोगान गाते हुए मधुर गुंजार कर रहे हैं। वसन्त के आगमन से आसपास में फूलों की सुगन्ध आ रही है जो सोने में सुगन्ध होने से दुगुना आनन्द प्रदान कर रही है। अर्थात् **सोने में सुगन्ध** की कहावत को चरितार्थ कर रही है। उससे सभी ओर विभिन्न तरह के फूलों की सुगन्ध व्याप्त रहती है। सेनापति कहते हैं कि शोभा के समूह एवं सुखमय सुन्दर साज-सज्जा से युक्त ऋतुराज वसन्त एक राजा के समान आता हुआ सुशोभित हो रहा है।

विशेष-

1. ऋतु एवं प्रकृति का वर्णन नवीन कल्पना-शैली में किया गया है। सुन्दर रंग-बिरंगी प्रकृति को वसन्त रूपी राजा का सुखमय निवास-स्थान बताया गया है।
2. अनुप्रास, रूपक तथा उपमा अलंकार प्रमुख रूप से प्रयुक्त हैं। कवित्त छन्द का सौन्दर्य एवं ब्रजभाषा का प्रयोग दर्शनीय है।

अथवा

15. निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए। 6

देखैं छिति अंबर जलै है चारि ओर छोर,
तिन तरबर सब ही कौं रूप ह्रयौ है।
महाझर लागै जोति भादव की होति चलै,
जलद पवन तन सेक मानों पर्‌यौ है।
दारून तरनि तरैं नदी सुख पावैं सब,
सीरी घन छाँह चाहिबौई चित्त धर्‌यौ है।
देखौ चतुराई सेनापति कविताई की जू,
ग्रीषम विषम बरसा की सम कर्‌यौ है।।

उत्तर :

प्रसंग- प्रस्तुत पद्यांश कवि सेनापति द्वारा रचित ऋतु-वर्णन से लिया गया है। इसमें श्लेष के द्वारा गर्मी और वर्षा इन दोनों ऋतुओं का वर्णन एक साथ किया गया है। कवि वर्णन करते हुए कहते है कि-

व्याख्या- ग्रीष्म ऋतु के पक्ष में- धरती और आकाश में चारों ओर-ओर अधिक जलन (प्रचण्ड ताप) फैल रहा है। इसकी तीव्र गर्मी ने सभी पेड़-पौधों की हरियाली को सुखाकर हर लिया है। इस ग्रीष्म काल में सभी जगह भयानक ताप (लू) फैल रहा है और उसकी लपट दावाग्नि की तरह अत्यन्त तीव्र बनती जा रही है तथा तेज लू (गर्म हवा) से सभी प्राणियों के शरीर तपाये जा रहे हैं। सूर्य की प्रचण्ड किरणों से बचने के लिए लोग नदी के जल का सेवन करना चाहते हैं तथा पेड़-पौधों की घनी छाय में रहने की मन में अभिलाषा करते हैं। सेनापति कहते हैं कि इस प्रकार मेरी कविता-रचना की यह चतुराई या चमत्कार है कि ग्रीष्म ऋतु भी वर्षा के समान श्लिष्ट पदों से वर्णित की गई है।

सभी विद्यार्थियों से निवेदन है कि RBSE के सॉल्वड मॉडल पेपर/डेस्क वर्क प्राप्त करने के लिए 9460377092 को अपनी क्लास के व्हाट्सएप्प ग्रुप में एड करें। आपकी क्लास के व्हाट्सएप्प ग्रुप में पेपर भेज दिए जाएंगे।
www.rajteachers.com

वर्षा ऋतु के पक्ष में– धरती और आकाश में सभी तरफ जल ही जल है, इस तरह जल–प्रलय (बाढ़ आदि) से वर्षा ऋतु ने पेड़–पौधों को उजाड़–उखाड़ दिया है। इस काल में वर्षा अत्यधिक मात्रा में होती है और वर्षा का यह क्रम भादौं के महीने तक चलता रहता है। इस काल में बादलों की घटा से चारों ओर जल का सिंचन होता रहता है। भादौं के बाद ही सूर्य के दर्शन होते हैं तथा बरसात में नदी को नाव में सवार होकर पार करना कठिन हो जाता है। इस काल में सब लोग घने बादलों की छाया से घिरे रहते हैं तथा अपने–अपने शरीर को जल–वर्षण से बचाने की अभिलाषा करते हैं। सेनापति कवि कहते हैं कि यह मेरी कविता–रचना की चतुराई या चमत्कार है कि जो मैंने वर्षा ऋतु का भी ऋतु की तरह चमत्कारपूर्ण वर्णन कर दिया है।

विशेष–

1. ग्रीष्म और वर्षा ऋतु के लिए श्लिष्ट विशेषणों का प्रयोग कर प्राकृतिक शोभा का चमत्कारी वर्णन किया गया है।
2. श्लेष अलंकार प्रमुख है। साथ ही अनुप्रास, रूपक, उत्प्रेक्षा एवं काव्यलिंग अलंकार का भी प्रयोग हुआ है। कवित्त छन्द की गति–यति उचित है।

16. निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए– 6

लड़के सबसे ज्यादा प्रसन्न है। किसी ने एक रोजा रखा है, वह भी दोपहर तक, किसी ने वह भी नहीं; लेकिन ईदगाह जाने की खुशी उनके हिस्से की चीज है। रोजे बड़े–बूढ़ों के लिए होंगे। इनके लिए तो ईद है। रोज ईद का नाम रटते थे आज वह आ गई। अब जल्दी पड़ी है कि लोग ईदगाह क्यों नहीं चलते? इन्हें गृहस्थी की चिंताओं से क्या प्रयोजन! सेवैयों के लिए दूध और शक्कर घर में है या नहीं, इनकी बला से, ये तो सेवैयाँ खाएँगे। वह क्या जाने कि अब्बाजान क्यों बदहवास चौधरी कायमअली के घर दौड़े जा रहे हैं। उन्हें क्या खबर कि चौधरी आज आँखें बदल लें, तो यह सारी ईद मुहर्रम हो जाए।

उत्तर :

सन्दर्भ और प्रसंग– प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्यपुस्तक में संकलित **मुंशी प्रेमचन्द** की प्रसिद्ध कहानी **ईदगाह** से ली गई हैं। ईद के त्योहार पर पूरे गाँव में हलचल हो रही है। लोग ईदगाह जाकर नमाज पढ़ने की तैयारी में लगे हुए हैं। ईदगाह शहर में है और गाँव से तीन कोस दूर है। वहाँ तक पैदल जाना है। इसलिए सभी ग्रामीण रोजेदार अपने काम जल्दी निबटाने में लगे हैं।

व्याख्या– लेखक कहते हैं कि ईद के अवसर पर सबसे अधिक खुशी लड़कों को हो रही है। इनमें से कुछ ने एक दिन ही रोजा रखा है। वह भी पूरा नहीं, बस दोपहर तक। ज्यादातर बच्चों ने रोजा रखा ही नहीं है परन्तु उनकी खुशी का सम्बन्ध रोजे रखने या न रखने से नहीं है। उनकी खुशी का कारण तो ईद का त्योहार है। ईदगाह जाने की उनको भी खुशी है। रोजा रखना बड़े–बूढ़ों का काम है। लेकिन ईद का त्योहार तो बच्चों के लिए खुशी देने वाला है। वे हर दिन ईद की बात करते थे। कब आयेगी ईद? अब उनका इंतजार समाप्त हुआ। ईद का त्योहार आ गया है। अब इनको ईदगाह जाने की जल्दी है। वे लोगों के जल्दी ईदगाह न चलने से बेचैन हो रहे हैं। बड़ों को घर–गृहस्थी की चिन्ता है। बच्चों को इससे क्या मतलब? ईद पर सेवइयाँ पकानी हैं। इसके लिए दूध और शक्कर का इंतजाम करना है। यह बड़ों की चिन्ता है। बच्चों को इससे कोई संबंध नहीं। उनको तो सेवैयाँ खानी हैं। बच्चों के पिता चौधरी कायमअली के घर कुछ परेशान होकर दौड़े गये हैं। वह उनसे ईद के त्योहार को मनाने के लिए कुछ रुपये उधार माँगने गये हैं, नहीं तो ईद कैसे मनेगी? यदि चौधरी रुपया उधार नहीं देंगे तो ईद के त्योहार की खुशी मुहर्रम के मातम में बदल जायेगी। सारा त्योहार फीका हो जायेगा। बच्चे इस बात को नहीं जानते।

विशेष–

1. ईद के अवसर पर बच्चों की खुशी और ईदगाह जल्दी जाने की बेचैनी का वर्णन है।
2. लेखक ने ग्रामीणों की निर्धनता की ओर संकेत किया है।
3. भाषा सरल और सुबोध है। उसमें प्रवाह है। मुहावरों और उर्दू शब्दों के प्रयोग ने उसको प्रभावशाली बनाया है।
4. वर्णनात्मक–विवरणात्मक शैली का प्रयोग हुआ है।

अथवा

16. निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए– 6

उस अठन्नी को ईमान की तरह बचाती चली आती थी इसी ईद के लिए, लेकिन कल ग्वालन सिर पर सवार हो गई तो क्या करती! हामिद के लिए कुछ नहीं है, तो दो पैसे का दूध तो चाहिए ही। अब तो कुल दो आने पैसे बच रहे हैं। तीन पैसे हामिद की जेब में, पाँच अमीना के बटुवे में। यही तो बिसात है और ईद का त्योहार, अल्लाह ही बेड़ा पार लगाए। सभी को सेवैयाँ चाहिए और थोड़ा किसी की आँखों नहीं लगता। किस–किस से मुँह चुराएगी। और मुँह क्यों चुराए? साल–भर का त्योहार है। जिदंगी खैरियत से रहे, उनकी तकदीर भी तो उसी के साथ है। बच्चे को खुदा सलामत रखें, ये दिन भी कट जाएँगे।

उत्तर :

सन्दर्भ एवं प्रसंग– प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्यपुस्तक में संकलित ईदगाह कहानी से ली गई है। इस कहानी के लेखक कथा–सम्राट् मुंशी प्रेमचंद हैं। हामिद की दादी अमीना एक गरीब महिला थी। आज ईद पर उसे इस बात की चिंता थी कि त्योहार का खर्च कहाँ से आएगा? उसके पास कुल दो आने (आठ पैसे) थे, जिनमें से तीन पैसे उसने ईद के मेले पर खर्च करने के लिए हामिद को दे दिए थे और पाँच पैसे से वह ईद पर बनने वाली सेवइयों का इंतज़ाम कर रही थी। उसकी इसी गरीबी और विवशता का चित्रण प्रेमचंद ने इस अवतरण में किया है।

व्याख्या– अमीना का इकलौता पुत्र आबिद पिछले वर्ष हैजे की बीमारी के कारण चल बसा था। अतः अपने पोते हामिद का पालन–पोषण वह इधर–उधर सिलाई करके उससे मिले पैसों से करती थी। उस दिन फहीमन के कपड़े सिलने से आठ आने सिलाई के मिले थे जिन्हें वह ईद के त्योहार हेतु सहेजकर रखे हुए थी। किन्तु कल दूध देने वाली ग्वालन अपने पैसे के लिए तगादा करने लगी तो उसका हिसाब करना पड़ा। उस अठन्नी को अमीना बड़ी सावधानी से बचाकर रखे थी, किन्तु अब ग्वालन को देने के बाद उसके पास केवल दो आने शेष बचे थे जिनमें से तीन पैसे उसने हामिद को ईद के मेले हेतु दे दिए थे और शेष बचे पाँच पैसों से वह सेवइयों का इंतज़ाम कर रही थी। कैसे होगा सब, अब तो अल्लाह (ईश्वर) का ही भरोसा है, वही बेड़ा पार लगाएगा। त्योहार पर सभी कामवालियों को सेवइयाँ देनी पड़ेंगी चाहे वह धोबिन हो या नाइन, जमादारिन हो या चूड़ीवाली (मनिहारिन)। थोड़ी सेवइयों से इनका काम न चलेगा, मुँह फुला लेंगी और फिर त्योहार रोज–रोज थोड़े ही आते हैं। ये बेचारी भी तो त्योहार पर आस लगाए रहती हैं। इनकी तकदीर भी तो उसी के साथ जुड़ी है। मेरा पोता खैरियत से रहे, भगवान् उसे सही–सलामत रखे, गरीबी के ये दिन भी कट ही जाएँगे।

विशेष–

सभी गुरूजनों से निवेदन है कि RBSE के सॉल्वड मॉडल पेपर प्राप्त करने के लिए 9460377092 पर सिर्फ TEACHER शब्द SMS करें (व्हाट्सएप्प ना करें) आपसे संपर्क कर आपको विशेष रूप से मॉडल पेपर भेजे जाएंगे।
www.rajteachers.com

1. ईद के त्योहार के आने पर निर्धन अमीना की चिन्ता का सजीव वर्णन हुआ है।
2. त्योहार भी निर्धन लोगों के लिए आनन्ददायक नहीं होते। उस समय भी पीड़ा और चिन्ता उनका पीछा नहीं छोड़ती।
3. प्रेमचन्द को गरीबों की पीड़ा मेरी जिन्दगी का गहन ज्ञान है। यह इस वर्णन से स्पष्ट होता है।
4. विषयानुकूल, प्रवाहपूर्ण और मुहावरेदार भाषा का प्रयोग हुआ है।
5. मनोविश्लेषणात्मक शैली का प्रयोग हुआ है।

17. सेनापति का ऋतु वर्णन हिन्दी साहित्य में अनूठा क्यों है? 6

उत्तर :

रीतिकाल में अनेक कवियों ने रीति-परम्परा के निर्वाह के साथ-साथ प्रकृति का आलम्बन एवं उद्दीपन दोनों ही रूपों में वर्णन किया है। काव्य-क्षेत्र में सेनापति की अद्वितीय सफलता का रहस्य उनके उत्कृष्ट ऋतु वर्णन में ही है। सेनापति के ऋतु वर्णन में कुछ ऐसी ऋतुएँ भी हैं, जिनके प्रति उन्होंने अपना विशेष अनुराग व्यक्त किया है। ऐसी ऋतुओं में वसन्त ऋतु का नाम सबसे पहले आता है। वसन्त के अतिरिक्त ग्रीष्म ऋतु, वर्षा ऋतु और शीत ऋतु को सेनापति ने विशेष महत्त्व दिया है। सेनापति ने इन ऋतुओं का वर्णन बड़ी सूक्ष्मता, मनोहरता और हार्दिक भावना के साथ किया है। ये वे ऋतुएँ हैं, जिनमें आनन्द और उल्लास का वर्णन है, तपन और दाहकता का वर्णन है, शीतलता और स्निग्धता का वर्णन है और साथ ही साथ शीत ऋतु की हाड़-काँपने वाली स्थितियों का भी उल्लेख है।

सेनापति ने बिम्ब-चित्रणों के माध्यम से अपने ऋतु वर्णन को प्रभावोत्पादक बनाने का प्रयास किया है। सेनापति ने जीवन के गहन एवं सूक्ष्म अध्ययन का परिचय ऋतु वर्णन में दिया है। इससे विदित होता है कि विविध ऋतुओं में आहार-विहार, आचार-विचार आदि से भी कवि सेनापति परिचित थे। उनके ऋतु वर्णन में स्वाभाविकता है। सेनापति का ऋतु वर्णन उन्हें रीतिकालीन अन्य कवियों में विशिष्टता प्रदान करता है। इनका ऋतु वर्णन अपनी सरसता, स्वाभाविकता, चित्रोपमता, दृष्टि सूक्ष्मता एवं विदग्धता के कारण हिन्दी साहित्य में अनूठा है।

अथवा

17. पठित काव्यांश के आधार पर शीत ऋतु का वर्णन कीजिए। 6

उत्तर :

सेनापति प्रकृति-चित्रण के समर्थ कवि हैं। उन्होंने शीत ऋतु का अत्यधिक सजीव और सरस चित्र प्रस्तुत करते हुए कहा है कि शीत ऋतु का प्रबल सेनापति अपने दल-बल के साथ क्रोध करके चढ़ आया है। उसकी आक्रामकता से सभी प्रभावित हैं। शीत ऋतु के आते ही अग्नि दुर्बल हो गई है। उसकी ताप किसी को अनुभव ही नहीं होती, सूर्य शीतल हो गया है। बर्फीली हवा की चुभन तीक्ष्ण बाणों की वर्षा के समान घातक है, जिसके कारण लोग घर के कोनों में दुबक कर बैठे हैं। ताप भी घर के कोनों में ही छिपकर बैठा है। शीत में लोग थोड़ी-सी आग जलाकर उसे हृदय से लगाकर रखते हैं। धुएँ के कारण नेत्रों से अश्रु प्रवाहित हो रहे हैं। शीत से बचने के लिए लोग अग्नि पर झुके पड़ रहे हैं। ऐसा लगता है कि शीत की प्रबलता से डरकर लोग हाथ फैलाकर अलाव की आग को घेरकर बैठे हैं अथवा अपने दोनों हाथों को बाँधकर उसे छाती से लगा रहे हैं। शीत ऋतु के प्रभाव का इतना जीवंत वर्णन ही सेनापति को कालजयी कवि बनाता है।

18. स्त्री-शिक्षा समाज के पतन का कारण नहीं वरन् समाज के विकास की सीढ़ी है। इस कथन के आलोक में स्त्री-शिक्षा पर अपने विचार लिखिए। 6

उत्तर :

हमारे देश में प्राचीनकाल में स्त्री-शिक्षा की सुविधाएँ सीमित थी। कुछ गुरुकुलों एवं आश्रमों में स्त्री-शिक्षा का प्रचलन था। मध्यकाल में अनेक कारणों से स्त्री-शिक्षा का विरोध किया गया। अंग्रेजों के शासन-काल में भी रूढ़िवादी पुरुष-वर्ग स्त्री-शिक्षा का विरोध करता रहा, परन्तु कुछ प्रमुख समाज-सुधारकों ने इसका विरोध कर स्त्री शिक्षा का समर्थन किया। महावीर प्रसाद द्विवेदी ने भी प्रस्तुत निबन्ध में स्त्री-शिक्षा के विरोधी कुतर्कों का खण्डन कर स्पष्ट कहा कि स्त्री-शिक्षा से समाज के उत्थान और विकास का मार्ग प्रशस्त होता है। पुरुष-प्रधान समाज चाहे कुछ भी कुतर्क दे, परन्तु अच्छे सुखमय गृहस्थ के लिए स्त्री का सुशिक्षित होना सर्वोत्तम रहता है। पढ़ी-लिखी नारी ही अपनी संतान को अच्छे संस्कार दे सकती है। गृहस्थी के भार को सुशिक्षित नारी उचित ढंग से वहन करती है। समाज व देश में शिक्षिका, अभिनेत्री, समाज-सेविका, डॉक्टर-वैद्य, वकील आदि अनेक रूपों में शिक्षित नारियाँ जो योगदान कर रही हैं, उससे अब सभी लोग परिचित हैं। शिक्षित नारियों से समाज का पतन नहीं, अपितु समाज व देश का उत्थान एवं विकास हो रहा है। वर्तमान में अनेक नारियाँ पढ़-लिखकर देश के सर्वोच्च प्रशासनिक पदों पर कार्यरत हैं और देश के विकास में पुरुषों से बढ़कर काम कर रही हैं।

अथवा

18. स्त्रियों को पढ़ाने से अनर्थ होते हैं-कुतर्कवादियों की इस दलील का खण्डन द्विवेदीजी ने कैसे किया? अपने शब्दों में लिखिए। 6

उत्तर :

द्विवेदीजी ने कुतर्कवादियों की स्त्री-शिक्षा विरोधी दलीलों का जोरदार खण्डन करते हुए कहा है कि यदि स्त्रियों को पढ़ाने में अनर्थ होता है तो पुरुषों को भी पढ़ाने में अनर्थ होते होंगे। यदि पढ़ाई को अनर्थ का कारण मान लिया जाए तो सुशिक्षित पुरुष द्वारा किए जाने वाले सभी अनर्थ भी पढ़ाई के दुष्परिणाम माने जाने चाहिए। अतः उनके भी स्कूल-कॉलेज बन्द कर दिए जाने चाहिए।

स्त्रियों को पढ़ाने में अनर्थ होता है, इस सम्बन्ध में द्विवेदी जी ने तर्क देते हुए कहा है कि शकुन्तला ने दुष्यन्त को कटु वचन नहीं कहे। उसके वे कटुवचन उसकी शिक्षा के परिणाम नहीं थे, यद्यपि उसका स्वाभाविक क्रोध था। इसी प्रकार सीता का कथन राम के प्रति उनका स्वाभाविक क्रोध था। इसके साथ ही उन्होंने व्यंग्यपूर्ण तर्क देते हुए कहा है कि स्त्रियों के लिए पढ़ना कालकूट और पुरुषों के लिए पीयूष का घूँट। ऐसी ही दलीलों और दृष्टान्तों के आधार पर कुछ लोग स्त्रियों को अनपढ़ रखकर भारत का गौरव बढ़ाना चाहते हैं?

19. गोपियों का सर्वस्व किसने और किस प्रकार लूट लिया था? 2

उत्तर :

गोपियों का सर्वस्व श्रीकृष्ण ने लूट लिया था। गोपियाँ श्रीकृष्ण से प्रेम करती थी और उनकी मादक, मनोहर रूप छवि पर मोहित थी। श्रीकृष्ण ने उनके मन को चुराकर अपनी मधुर मुस्कान से उनका सर्वस्व लूट लिया था।

सभी विद्यार्थियों से निवेदन है कि RBSE के सॉल्वड मॉडल पेपर/डेस्क वर्क प्राप्त करने के लिए 9460377092 को अपनी क्लास के व्हाट्सएप्प ग्रुप में एड करें। आपकी क्लास के व्हाट्सएप्प ग्रुप में पेपर भेज दिए जाएंगे।
www.rajteachers.com

20. श्रीकृष्ण की हँसी की तुलना कवि ने चाँदनी से क्यों की है? 2

उत्तर :

जिस प्रकार चन्द्रमा की चाँदनी छिटक कर सम्पूर्ण वातावरण को अत्यधिक मनोरम और सुन्दर बना देती है, उसी प्रकार श्रीकृष्ण की हँसी से लोगों को अत्यन्त आनन्द और सुख मिलता है। इसलिए कवि ने श्रीकृष्ण की हँसी की तुलना चाँदनी से की है।

21. **मातृ-वन्दना** कविता में कवि माँ भारती से किस आशीर्वाद की अपेक्षा करता है? 2

उत्तर :

मातृ-वन्दना कविता में निराला जी माँ भारती से इस आशीर्वाद की अपेक्षा करते हैं कि वह जीवन-पथ की सभी विघ्न-बाधाओं को पार करता हुआ माँ की सेवा में अपना बलिदान कर उसे हर दुःख से मुक्त करा सके। माँ भारती उसे दृढ़ से दृढ़कर बनने की शक्ति और सामर्थ्य प्रदान करें जिससे कि वह महाकाल के तीक्ष्णतम तीरों के आघात को भी सह सके, उसके हृदय में माता की पावन मूर्ति सदैव प्रतिष्ठित रहे और वह अपने हृदय कमल पर एकटक दृष्टि से उसे देखता रहे।

22. **एक अद्‌भुत अपूर्व स्वप्न** नामक पाठ का वर्ण्य-विषय क्या है? 2

उत्तर :

एक अद्‌भुत अपूर्व स्वप्न नामक पाठ का वर्ण्य-विषय मन में उठने वाले काल्पनिक भावों का उल्लेख करना है, परन्तु इसमें व्यंग्य रूप में यह भी वर्णन किया गया है कि उस समय हमारा समाज धर्मान्धता, स्वार्थपरता तथा अंग्रेज-सरकार की अत्याचारपूर्ण नीतियों से ग्रस्त हो गया था। शिक्षा पद्धति का ढाँचा एकदम विकृत हो गया था। इसमें नश्वर संसार में यशस्वी होने की लालसा आदि का वर्णन किया गया है। उस समय कुछ सामाजिक चेतना वाले लोग यथापि देश में शिक्षा का प्रचार-प्रसार करना चाहते थे, लेकिन उनमें कठोरता का अभाव था और कोरे-स्वप्न देखने की परम्परा थी। लेखक ने ऐसी स्थिति पर अपने स्वप्न के माध्यम से व्यंग्य किया है।

23. अमर शहीद एकांकी के पात्र सागरमल गोपा के देश-प्रेम के बलिदान पर प्रकाश डालिए। 2

उत्तर :

सागरमल गोपा ने जैसलमेर राज्य में फैले सामन्ती अत्याचारों के विरूद्ध आवाज उठाई थी। इस कारण वहाँ के शासक महारावल ने उस पर देशद्रोह, गद्दार आदि के आरोप लगाये और जेल में डालकर अत्यन्त यातनाएँ दी। अन्त में उनके शरीर पर मिट्‌टी का तेल छिड़ककर उसे जीवित ही जला दिया। प्रखर देशभक्त होने के कारण सागरमल गोपा ने सभी कष्ट सहे और अन्त में अपने प्राणों का बलिदान देना अपना धर्म समझा। इस प्रकार सागरमल गोपा ने उस सामन्ती काल में अडिग देश-प्रेम व आत्म-बलिदान का परिचय दिया।

24. पीपा ने अपनी भक्ति-भावना द्वारा समाज के उपेक्षित वर्ग को किस प्रकार दृढ़ बनाया? 2

उत्तर :

सन्त पीपा ने अपनी भक्ति-भावना द्वारा समाज के उपेक्षित वर्ग के हृदय में आत्मविश्वास, आत्मनिर्भरता, हिम्मत, दृढ़-निश्चय आदि को जाग्रत करते हुए समाज को रूढ़ियों एवं अन्धविश्वासों से मुक्त रहने का उपदेश दिया। राजा होते हुए भी अपना सर्वस्व वैभव त्यागकर समाज-सुधार और निर्गुण भक्ति-भावना के प्रचार में लगकर सन्त पीपा ने ज्ञान-चेतना को जगाया और सच्ची साधना का तरीका बताया। सन्त पीपा ने हिंसा का विरोध किया और लोक-जीवन में आचरण की पवित्रता पर जोर दिया।

25. **ग्रीष्म विषम बरसा की सम कर्‌यौ है** इस पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए। 1

उत्तर :

ग्रीष्म और वर्षा दो असमान ऋतुओं को सेनापति ने एक समान करके वर्णित किया है।

26. **आयौ सखी सावन** पंक्ति में कवि क्या संकेत कर रहा है? 1

उत्तर :

इस पंक्ति में कवि सावन के महीने के आगमन की ओर संकेत कर रहा है। कवि नायिका से कहता है कि सावन माह में विरह का बुखार बढ़ गया है और कामदेव अर्थात् प्रेमानुराग तरसा रहा है। प्रेमी से मिलने की आशा को बढ़ा रहा है।

27. बौद्ध धर्म के त्रिपिटक ग्रंथ की भाषा क्या है? 1

उत्तर :

बौद्ध धर्म के त्रिपिटक ग्रंथ की भाषा प्राकृत है।

28. संत पीपा को काशी जाकर गुरु रामानन्द से मिलने की सलाह किसने दी थी? 1

उत्तर :

पीपा को काशी जाकर गुरु रामानन्द से मिलने की सलाह वैष्णव भक्त मण्डली के मुखिया ने दी थी।

29. सेनापति के काव्य की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। 4

उत्तर :

सेनापति रीतिकाल के प्रतिभाशाली कवि माने जाते हैं। ये अलंकार सम्प्रदाय के समर्थक थे। इनके काव्य की ये विशेषताएँ हैं-

1. सेनापति ने श्रृंगार रस के दोनों पक्षों का चित्रण किया है। अपनी कुल-परम्परा के अनुसार ये रामभक्त थे, इस कारण इन्होंने राम-कथा के साथ ही शिवजी, गंगा एवं कृष्ण की भी स्तुति की है। प्रकृति-चित्रण में इन्होंने सभी ऋतुओं का स्पष्ट वर्णन किया है।
2. सेनापति के काव्य में ब्रज भाषा का प्रयोग हुआ है। इनकी भाषा में साधारण शब्द भी अत्यधिक सशक्त लगते हैं। प्रसाद, ओज तथा माधुर्य गुण का प्रयोग कर इन्होंने अन्य अलंकारों के साथ श्लेष अलंकार का विशेष प्रयोग किया है। शब्द-चमत्कार की दृष्टि से सेनापति को बेजोड़ कवि माना जाता है।
3. सेनापति के काव्य में भावपक्ष एवं कलापक्ष का सुन्दर चित्रण हुआ है। इन्होंने मुक्तक शैली में कवित्त की रचना की है। साथ ही कुछ छप्पय और सवैये की रचना भी की। इस प्रकार कवि सेनापति का काव्य सभी विशेषताओं से सुन्दर दिखाई देता है।

30. महावीर प्रसाद द्विवेदी का साहित्यिक परिचय दीजिए। 4

उत्तर :

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी का जन्म रायबरेली के दौलतपुर गाँव में एक कान्यकुब्ज ब्राह्मण परिवार में हुआ। ये स्कूली शिक्षा पूर्ण कर रेलवे

सभी गुरूजनों से निवेदन है कि RBSE के सॉल्वड मॉडल पेपर प्राप्त करने के लिए 9460377092 पर सिर्फ TEACHER शब्द SMS करें (व्हाट्सएप्प ना करें) आपसे संपर्क कर आपको विशेष रूप से मॉडल पेपर भेजे जाएंगे।
www.rajteachers.com

में नौकरी करने लगे, परन्तु स्वाभिमान के कारण इस्तीफा देकर सन् 1903 में **सरस्वती** पत्रिका के सम्पादन से जुड़ गये। द्विवेदीजी संस्कृत, बंगला, मराठी, उर्दू आदि अनेक भाषाओं के ज्ञाता थे। द्विवेदीजी प्रखर व्यक्तित्व एवं बहुमुखी प्रतिभा के साहित्यकार थे। वे कवि, समालोचक, निबन्धकार, सम्पादक, भाषा वैज्ञानिक तथा इतिहासकार आदि के साथ समाज-सुधारक रूप में सर्वमान्य रहे। सन् 1903 से 1920 तक सरस्वती पत्रिका का सम्पादन करते हुए द्विवेदीजी ने हिन्दी गद्य का परिष्कार किया, हिन्दी वर्तनी एवं व्याकरण को स्थिर किया। इस प्रकार हिन्दी साहित्य के विकास में इनका एक विशेष योगदान रहा। इनका निधन सन् 1938 में हुआ।

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी की मौलिक रचनाएँ हैं- काव्य-मंजूषा, सुमन, अबला विलाप, कविता-कलाप (काव्य); अद्‌भुत आलाप, सम्पत्ति शास्त्र महिला-मोद, रसज्ञ-रंजन, साहित्य-सीकर आदि गद्य संग्रह तथा साहित्यालाप, साहित्य-सन्दर्भ एवं आलोचनांजलि (समालोचना)। इनकी अनूदित रचनाएँ भी मिलती हैं।

□□□□□□□

सभी विद्यार्थियों से निवेदन है कि RBSE के सॉल्वड मॉडल पेपर/डेस्क वर्क प्राप्त करने के लिए 9460377092 को अपनी क्लास के व्हाट्सएप्प ग्रुप में एड करें। आपकी क्लास के व्हाट्सएप्प ग्रुप में पेपर भेज दिए जाएंगे।
www.rajteachers.com